उ विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत विषयशिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: 04-05-2021 (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

पाठ:-द्वितीय: पाठनाम बुद्धिर्बलवती सदा

- इति श्रुत्वा व्याघ्रमारी काचिदियमिति मत्वा व्याघ्रो भयाकुलचित्तो नष्ट:।

निजबुद्ध्या विमुक्ता सा भयाद् व्याघ्रस्य भामिनी ।
अन्योपि बुद्धिमाँल्लोके मुच्यते महतो भयात् ।।।

भयाकुलं व्याघ्रं दृष्ट्वा कश्चित् धूर्त्त: शृगाल: हसन्नाह –"भवान् कुत: भयात् पलायित: ?"

व्याघ्र: - गच्छ ,गच्छ जम्बूक ! त्वमपि किञ्चिद् गूढप्रदेशं ।यतो व्याघ्रमारीति या शास्त्रे श्रूयते तयाहं हन्तुमारब्ध: परं गृहीतकरजीवितो नष्ट: शीघ्रं तदग्रत: ।

शृगाल:- व्याघ्र! त्वया महत्कौतुकं आवेदितं यन्मानुषादपि बिभेषि ।

व्याघ्र: -प्रत्यक्षमेव मया सात्मपुत्रावेकैकशो मामत्तुं कलहायमानौ चपेटया प्रहरन्ती दृष्टा ।

अर्थ- यह सुनकर कि यह कोई बाघ को मारने वाली है ,ऐसा समझकर वह बाघ के डर से व्याकुल होकर वहां से भाग गया वह बाघ की स्त्री एक बुद्धि से छूट गई। अन्य बुद्धिमान भी इसी तरह अपनी बुद्धि के बल से महान भय से छूट जाते हैं उधर से व्याकुल बाघ को देखकर कोई धूर्त सियार हंसते हुए बोला आप कहां से डर कर भाग रहे हो ?

बाघ- जाओ जाओ सियार तुम भी किसी गुप्त प्रदेश में छिप जाओ क्योंकि जो व्याघ्र मारी शास्त्रों में सुनी है उसने मुझे मारना शुरू कर दिया है परंतु अपने प्राण हथेली पर रखकर में उसके आगे से भाग आया।

सियार -बाघ तुमने बहुत आश्चर्यजनक बात बताएं कि तुम मनुष्यों से भी डरते हो।

बाघ - मेरे सामने ही दोनों पुत्रों को एक-एक करके मुझे खाने के लिए झगड़ा करते हुए दोनों को चांटा मारते हुए मेरे द्वारा देखी गई।